Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **-- विजयनगर कालीन स्त्रियों की दशा ।**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

विजयनगर कालीन स्त्रियों की दशा ।

स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। सामान्यतः उन्हें भोग्या समझा जाता था। अल्पायु में उनका विवाह कर दिया जाता था। सामान्यता एक विवाह प्रथा प्रचलित थी पर शासक वर्ग और संपन्न वर्ग में बहु विवाह का प्रचलन था बाल विवाह मुख्यतः ब्राह्मणों में चलन में था । विधवाओं की स्थिति सुधारने के लिए राज्य द्वारा विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया गया। विजय नगर में विवाह कर आरोपित किए जाते थे लेकिन विधवा पुनर्विवाह इस कर से मुक्त थे। समाज में बहु विवाह सती प्रथा देवदासी प्रथा का प्रचलन था। ये प्रथायें स्त्रियों की निम्न स्थिति की सूचक हैं।यद्यपि राज्य विधवा विवाह को प्रोत्साहन देता था तथापि विधवाओं की स्थिति बहुत चिंतनीय थी। राज्य ने दहेज प्रथा को अवैधानिक घोषित कर दिया गया था।दहेज के लेनदेन पर दंड का प्रावधान था। इसी प्रकार का प्रावधान वर्तमान भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में देखा जा सकता है। इस प्रकार ब्राह्मणों ने विशुद्ध सामाजिक मामले में राज्य के हस्तक्षेप को

स्वीकार किया।

अभिजात वर्ग की महिलाओं की स्थिति कुछ अच्छी थी। उन्हें नृत्य, साहित्य की शिक्षा दी जाती थी। स्त्रियों को ज्योतिष, नृत्य, पहलवानी (कुश्ती) विविध क्षेत्रों में - संलग्न किया जाता था। लगभग प्रत्येक क्षेत्र में प्रवीण स्त्रियां मिल जाती थी।कुछ स्त्रियां महान विदुषियाँ एवं साहित्यकार थी। समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था परिवारों में महिलाओं की भूमिका उपयोगी थी समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था परिवारों में महिलाओं की भूमिका उपयोगी थी। समाज में गणिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान था।

स्त्रियों का सामान्यत: समाज में ऊँचा स्थान था तथा देश के राजनैतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक जीवन में उनके सक्रिय भाग लेने के दृष्टान्त दुष्प्राप्त नहीं हैं। कुश्ती लड़ने, तलवार एवं ढाल चलाने तथा संगीत एवं अन्य ललित कलाओं में प्रशिक्षित होने के अतिरिक्त कम-से-कम कुछ

स्त्रियों को अच्छी साहित्यिक शिक्षा दी जाती थी।

नूनिज लिखता है- उसके (विजयनगर के राजा के) पास मल्ल युद्ध करने वाली, ज्योतिष-विद्या जानने वाली एवं भविष्यवाणी करने वाली स्त्रियाँ भी हैं। उसके पास ऐसी स्त्रियाँ हैं, जो फाटकों के अन्दर किये गये खर्चो का पूरा हिसाब लिखती हैं। युद्ध क्षेत्र में सैनिक के रूप में भी स्त्रियों की अहम भूमिका रहती थी। स्त्रियां विभिन्न राजकीय पदों पर भी नियुक्त की जाती थी। विजयनगर शासक महिला अंगरक्षकों को अधिक विश्वसनीय मानते थे।अन्य स्त्रियाँ भी हैं, जिनका कर्तव्य है राज्य के कार्यों को लिखना तथा अपनी पुस्तकों की बाहरी लेखकों की पुस्तकों से तुलना करना। उसके पास संगीत के लिएं भी स्त्रियाँ है, जो वाद्य यंत्र बजाती तथा गाती हैं। राजा की पत्नियाँ तक संगीत में दक्ष हैं। .....कहा जाता है कि उसके पास न्यायाधीश एवं नाजिर हैं और पहरेदार भी हैं, जो हर रात राजमहल में पहरा देते हैं तथा ये स्त्रियाँ हैं।

पत्नियों की अनेकता विशेष रूप से धनी वगों में प्रचलित प्रथा थी। बाल-विवाह सामान्य रीति थी। सामाजिक जीवन में सम्भ्रान्त लोगों में अत्यधिक दहेज ऐठने की

कुप्रथा उग्र रूप में प्रचलित थी। विभिन्न सम्प्रदायों में झगड़ों को सुलझाने के लिए कभी-कभी राज्य सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप किया करता था। सती-प्रथा विजयनगर में बहुत प्रचलित थी तथा ब्राह्मण स्वच्छन्दता से इसके लिए अनुमति देते थे।

References: Internet & Competitive books.